इकाई 10 साम्राज्यवाद के सांस्कृतिक आयाम

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 साम्राज्यों के लिए सांस्कृतिक तर्क

10.3 ईसाई धर्म तथा मिशनरी कार्यकलाप

10.4 शाही नियत्रंण के साधन : शिक्षा तथा भाषा

10.5 साम्राज्य में खेल-कूद तथा संस्कृति

10.6 साम्राज्य निर्माण में मादक पदार्थों की भूमिका

10.7 सांस्कृतिक आधिपत्य के आधुनिक विचार

10.8 सांराश

10.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप निम्न के बारे में जान पाएंगे :

- साम्राज्य के सांस्कृतिक आयाम;
- विश्व को अपने अधीन करने के प्रयासों का सैद्धान्तिक औचित्य;
- ईसाई मिशनरीयों की गतिविधियों में साम्राज्य की भूमिका तथा इसका उपनिवेशों के धर्मों पर प्रभाव;
- शाही विचारधारा के प्रसारण में बड़े स्तर की शिक्षण व्यवस्था की भूमिका;
- उपनिवेशों में खेलों के द्वारा हस्तक्षेप;
- साम्राज्य निर्माण में मादक पदार्थों की भूमिका; और
- सांस्कृतिक आधिपत्य की समकालीन अवधारणाएँ।

10.1 प्रस्तावना

इतिहासकारों ने 'साम्राज्यावाद' को यूरोप के विकास के क्रमिक आर्थिक विस्तार की ओर बढ़ने के रूप में परिभाषित किया है। साम्राज्यवाद इस अर्थ में एक चरणबद्ध घटनाओं, खोजों, उपनिवेशों को जीतने, शोषण, वितरण तथा अधिकार करने से बंधा हुआ है। साम्राज्यवाद का आर्थिक स्पष्टीकरण पहली बार अंग्रेज इतिहासकार जे. ए. हॉबसन ने 1902 तथा लेनिन ने 1917 में दिया था। हॉबसन ने साम्राज्यवाद को यूरोप के आर्थिक विस्तार के अभिन्न अंग के रूप में देखा था। उन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के बाद के साम्राज्यवादी चरण को यूरोपीयों के द्वारा अपने द्वारा उत्पादित वस्तुओं को स्वयं न खरीद पाने तथा यूरोप के उद्योगपतियों द्वारा अपनी पूंजी को नए बाजारों में स्थांनातरित कर लाभ प्राप्त करने के विचारों को जिम्मेदार ठहराया था। अतः साम्राज्यवाद उनके विचार में

एक नियंत्रण की व्यवस्था थी जो बाजार तथा पूंजीनिवेश दोनों को संरक्षित करती थी। उपनिवेशवाद ने इस विस्तार को सहयोग दिया तथा यूरोपीय नियंत्रण को और पक्का कर दिया था। इसका अर्थ अधीन देशों के नागरिकों को साम्राज्यवादियों के अधीन करना था। हॉबसन की तरह लेनिन भी उन तरीकों से चिंतित थे जो आर्थिक विस्तार के रूप में साम्राज्यवाद से जुड़े थे। उन्होंने 1917 में एक लेख प्रकाशित किया था जिसमें विस्तार को आर्थिक प्रेरकों से जोड़ा गया था। उनका तर्क यह था कि नए बाजारों में पूंजी का निर्यात पूंजीवाद की रक्षा का एक उपाय था। वह साम्राज्यवादी देशों के "श्रम के कुलीन तंत्र" के विचार के संरक्षण से जुड़ा हुआ था। हालांकि आर्थिक स्पष्टीकरण इसकी व्याख्या कर सकता है कि क्यों कोलम्बस जैसे लोगों को सम्पदा के नये स्रोत खोजने का वित्त पोषण किया गया था। परन्तु यह संस्कृतियों तथा देशज लोगों को उनकी भूमि पर अधीन बनाने पर साम्राज्यवाद के विध्वंसकारी प्रभाव का औचित्य प्रदान नहीं करता।

अब विद्वान साम्राज्यवादी ताकतों को उपनिवेशों की संस्कृति को परिवर्तित करने को बाज़ारों से जोड़ते हैं। जोन. एम. मकेंजी ने साम्राजयवाद को आर्थिक, राजनीतिक तथा सैन्य घटना से कुछ अधिक के रूप में परिभाषित किया है। उनके अनुसार यह एक जटिल विचारधारा है जिसके विस्तृत सांस्कृतिक, बौद्धिक और तकनीकी परिणाम निकले। साम्राज्यवाद का यह विचार प्रबोधन (Englightnment) के साथ स्थापित हुआ था जो कि यूरोपीय जीवन के राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक रूपान्तरण से आरम्भ हुआ था। प्रबोधन के विस्तृत संदर्भ में साम्राज्यवाद, आधुनिक राज्य के विकास, विज्ञान तथा आधुनिक विचारकों के विचारों का अभिन्न हिस्सा बन गया था। वहीं दूसरी ओर उपनिवेशवाद साम्राज्य की एक ऐसी बाहरी चौकी बन गया था जो उसका रक्षक किला भी था और व्यापार का बन्दरगाह भी। जहाँ उपनिवेश ऐसे बन्दरगाहों सुनिश्चित करने के लिए बने जहाँ से कच्चा माल भेजा जाता था तथा निर्मित वस्तुएं शाही केन्द्र से कुशलतापूर्वक वापस स्थांनातरित की जाती थी तथा कई अन्य कार्य भी करता था। उपनिवेशों की बस्तियों का सांस्कृतिक पक्ष भी था जो उनको यह दिखाता था कि पश्चिम की क्या छवि है तथा 'सभ्यता' क्या होती है? इस इकाई में हम साम्राज्यवाद के सांस्कृतिक पक्ष का विस्तृत वर्णन करेंगे।

10.2 साम्राज्यों के लिए सांस्कृतिक तर्क

उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप में वैज्ञानिक तथा छद्म वैज्ञानिक सिद्धांत बहुत प्रचलित थे। उनका साम्राज्यवाद के मुहावरों का भारी प्रभाव था और वे साम्राज्यवादी शासन के पक्ष में आकर्षक तर्क पेश करते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में नस्लवाद एक प्रभुत्वशाली विचारधारा थी। 18वीं शताब्दी में यह विचार प्रचलित था कि सभी मनुष्य एक ही प्रजाति के हैं परन्तु उनकी नस्ल अलग-अलग होती है। धीरे-धीरे शताब्दी के अन्त तक इस विचार में परिवर्तन हुए जिनमें यह सुझाव दिया गया कि नस्ल के अलग-अलग विशिष्ट स्तर होते हैं, जो त्वचा के रंग, बालों के प्रकार, तथा वंशानुगत नाक नक्स के आधार पर उन्हें श्रेष्ठ तथा निकृष्ट बनाते हैं। निम्न नस्लों की मिलावट के प्रति गहन चिंता व्यक्त की गई कि इससे आगे चलकर विकृतियाँ पैदा होंगी। अफ्रीका के क्षेत्रों पर अधिकार की होड़, एशिया पर विजय, प्रशान्त महासागरीय देशों पर कब्जे को अब गोरी नस्लों ने अपनी तथाकथित श्रेष्ठता की वैज्ञानिक समझ के साथ सिद्ध करना शुरू किया। इसके अनुरूप लोगों को अलग-अलग समूहों, नस्ल के नए विकासवादी मापक वर्गीकृत किया गया और गोरे लोगों की विजय को मानव विकास के और गोरे नस्ल की श्रेष्ठता का अवश्यमभावी परिणाम माना गया।

चार्ल्स डार्विन का विकासवादी सिद्धांत प्रकृति में "जीविता के लिए संघर्ष' अब समाजों पर लागू किया जाना। हर्बर्ट स्पेंसर ने एक नये पारिभाषिक शब्द "सर्वोत्तम की उत्तरजीवितता"

को इस्तेमाल किया (हर्बर्ट स्पेंसर को सामाजिक डार्विनवादी माना गया परन्तु नए विचारक उन्हें उपयोगितावादी मानते हैं) इसे इस काल के नस्लीय एवं अंतर्नस्लीय संघर्षों पर लागू किया गया। ऐसा कहा जा रहा था ताकतवर तथा सबलों का विकास करना चाहिए तथा कमजोरों को मरने देना चाहिए। इसे सामाजिक डार्विनवाद के रूप में प्रचारित किया गया। उस समय यूरोपीय देशों ने अकारण अपनी नस्लीय श्रेष्ठता को अपना लिया जो कि सामाजिक डार्विनवादियों द्वारा आपेक्षित थी। नस्लवाद के इस छद्म वैज्ञानिकवाद का विश्व पर बहुत बुरा तथा स्थायी प्रभाव पड़ना था। साम्राज्यवादी ताकतें स्वयं को सांस्कृतिक रूप से श्रेष्ठ मानती थी तथा उन्होंने उपनिवेशों के लोगों को सभ्य बनाने की जिम्मेवारी स्वयं अपने ऊपर ले ली थी।

10.3 ईसाई धर्म तथा मिशनरी कार्यकलाप

साम्राज्यवादी ताकतों ने मिशनरी गतिविधियों के द्वारा उपनिवेशों के लोगों के धार्मिक विश्वासों को प्रभावित किया था। यद्यपि कैथोलिक मिशनरी जिनमें जेशुइट (Jesuits) डोमिनिकन तथा फ्रैन्सीकन थे, यूरोप के सोलहवीं शताब्दी के विस्तार में सहयोगी थे। परन्तु वे अमेरीका में सबसे अधिक सफल थे उन्होंने अन्त में एशिया तथा अफ्रीका को भी प्रभावित किया था। उन्नीसवीं शताब्दी में प्रोटेस्टेंट मिशनरी आन्दोलन बढ़ा जो कि नई साम्राज्यवादी विचारधारा को एशिया तथा अफ्रीका में मजबूत करना चाहता था। बाईबिल के आदेश "संसार में सब जगह जाकर ईसाई धर्म के सिद्धांत हर जीव तक पहुँचाने" को अक्षरश प्रोटेस्टेंट महिलाओं एवं पुरुषों ने अपना कर्त्तव्य मानकर अपने घरों, संस्कृति, समाजों से बाहर जा कर साम्राज्यवाद को अपना व्यक्तिगत सहयोग, इंजीलवाद के माध्यम से दिया था। ईसाई धर्म प्रचारक बनकर उन्होंने उपनिवेशों के लोगों का बड़े स्तर पर धर्म परिवर्तन (Conversion) करवाया था। लोगों का धर्म परिवर्तन करवाने के लिए इन प्रोटेस्टेंट मिशनरीयों ने 'विधर्मी तथा गैर यूरोपीय लोगों' के लिए हॉस्पीटल तथा शिक्षण गतिविधियों के द्वारा ईसाई धर्म के प्रचार और इंजीलवादी गतिविधियों का आधार बनाया था। इन मिशनरी महिलाओं एवं पुरुषों के मकसद जटिल तथा भिन्न प्रकार के थे। बहुत सी यूरोपीय तथा अमेरीकी महिलाएं केवल साधारण रूप से अपने पतियों के साथ रहने के लिए ही मिशन पर आई थी, जबकि अन्य एकल महिलाओं के लिए मिशन अपने देशों में विवाह तथा (spinsterhood) की तुलना में एक आकर्षक विकल्प था। इसके अतिरिक्त इन ईसाई मिशनरियों द्वारा महिलाओं को जो मिशनरी जीवन का रोमांचकारी अवसर दिया गया था वह धर्म परिवर्तन के साहसिक कार्यों को करवाने के लिए था। महिलाओं को चर्च, स्कूल, तथा घरों में धार्मिक शिक्षा तथा ट्रेनिंग दिये जाने का यह एक आदर्श महिला व्यवसाय माना गया। इसके अलावा उन्हें धर्म परिवर्तन करवाने के लिए गहन धार्मिक अनुभव भी हुआ। यूरोपीय तथा अमेरीकन महिलाओं ने अपने कार्य को विदेशी भूमि पर महिलाओं का उत्थान और सुधार करने की भूमिका के रूप में देखा। इस एक नई नैतिक जिम्मेदारी समझकर यह मानती थी कि इस सामाजिक भूमिका से पुरुषों के व्यवहार में काफी सुधार हो रहे थे। वहीं कई स्थानों पर मिशनरी महिलाओं ने यह भी पाया कि कई समाजों की महिलाओं की शक्ति उनकी स्वयं की शक्ति से अधिक थी। कुछ मिशनरीयों ने यह भी स्वीकार किया कि कई स्थानों पर उन्हें वहां की धार्मिक और सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण ईसाई धर्म के लिए जगह बनाने में मुशिकलें आ रही थी। परन्तु ये लोग वहाँ पर अनुवाद के कार्य तथा लोगों को शिक्षित कर धर्म परिवर्तन करवाने में अपना समय भी देते थे। वे वहां की भाषाओं, स्थानीय रीति-रिवाज और सांस्कृतिक परंपराओं का अध्ययन करते थे। उदाहरण के लिए ब्रिटिश मिशनरी जेम्स लेगे ने अपने चीन के अन्दर मिशन के लिए उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में चीन में काम करते हुए चीनी शास्त्रीय रचनाओं को अंग्रेजी भाषा में अनुवादित (Translate) किया था जिनका आज भी व्यापक उपयोग होता है। कई मौकों पर ये लोग

अपनी खोजी हुई सांस्कृतिक परंपराओं को बढ़ा-चढ़ा कर बताते थे इससे वे उन उपनिवेश के लोगों में काम करने के लिए अपने देशों में वाहवाही लेते थे और अपने मिशनरी प्रयासों के लिए सहायता लेते थे। मिशनरी कामों तथा मिशनरी उद्यमों की प्रकृति ने साम्राज्यवाद के उद्देश्यों को और अधिक जोरदार तरीके से आगे बढ़ाया था। मिशनरियों द्वारा विजय के लिए आवश्यक जानकारी उपलब्ध करवाई जाती थी। ये सुनसान स्थानों में औपनिवेशिक केन्द्रों से दूर निर्णायक संचार के तरीके उपलब्ध करवाते थे। मिशनरियों के रहने के स्थान यूरोप में निर्मित समान तथा विचारों के मुख्य आदान प्रदान के बिन्दु थे। मिशनरी स्थानीय लोगों का "पापी की रक्षा" के नाम पर धर्म परिवर्तन कराने के साथ-साथ अपने साम्राज्यों के आर्थिक तथा राजनीतिक लक्ष्यों से भी जुड़े थे।

इस बिन्दु को पुनः समझने के लिए हमें ब्रिटिश उपनिवेशवाद के सांस्कृतिक प्रभाव को देखना होगा जब ब्रिटिश प्राच्यविदों (Orientalists) ने भारतीय इतिहास तथा धर्म को अपने तरीके से व्यवस्थित करना आरम्भ किया क्योंकि वे मानते थे कि ''स्थानीय नागरिक अपनी संस्कृति तथा कानूनों के अविश्वनीय व्याख्याकार थे।'' उन्होंने भारत में सभी परंपराओं तथा विश्वासों से संबंधित भारतीय धर्म की एक समरूपी धारणा निर्मित की जिसका पहले कोई अखिल भारतीय एक नाम या सिद्धांत नहीं था और जो अलग-अलग रूपों में था और पूरे देश में फैला हुआ था। इसके लिए उन्होंने एक पदानुक्रमित ढांचा और समान ध ार्मशास्त्र लादा जहाँ पहले लोगों के समूहों के अपने-अपने तरीके तथा विश्वास मौजूद थे। यह उन्होंने भारतीय धर्म के मूल को कुछ संस्कृत के ग्रंथों द्वारा स्थापित किया था। दूसरा भारतीय धर्म की अस्पष्ट प्रवृत्तियों द्वारा भारतीय धर्म को ऐसी निर्देशात्मक परिभाषा दी गई जो समकालीन यहूदी तथा ईसाई परंपराओं की समझ पर आधारित थी। उन्होंने हिन्दू धर्म में त्रिदेव की भी खोज की थी। उन्होंने यह प्रमाणित किया की सभी हिन्दू इन देवताओं की पूजा करते थे जिसमें एक ऐसा देवता भी था जिसकी अधिकांश हिन्दू पूजा नहीं करते थे। हालांकि इसके विपरीत हिन्दू धर्म अधिकांश रूप में मौखिक परंपराओं तथा विश्वासों और प्राकृतिक वस्तुओं में जैसे पत्थरों, पेड़ों में पाये जाने वाले देवी-देवाताओं में आस्था पर आधारित था। इस प्राच्यवादी हिन्दूवाद के पुनर्निर्माण के दौरान भारतीय धर्म के 'मौखिक तथा लोकप्रिय' आयामों तथा परंपराओं को मान्यता नहीं दी गई। उन्हें भारतीय समकालीन धर्म के अंधविश्वासों तथा परंपराओं के पतन के साक्ष्य के रूप में पेश किया गया जो स्वयं उनके 'अपने धर्म ग्रंथों' के अनुकूल नहीं थी। इस पूर्वाग्रह ने भारत के गांवों तथा छोटे कस्बों को और अधिक हाशिये पर ला दिया था जिसने केन्द्रीय शक्ति द्वारा नियंत्रण की अनुमति दी। भारत कैसा होना चाहिए उनका धार्मिक आचरण कैसा होगा यह अब उनके अनुसार पश्चिमी अभिरुचियों के अनुसार विचार लादा गया। अब भारतीय धर्म ग्रंथों का उपयोग आवश्यक प्रशासनिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ब्रिटिश लोगों द्वारा किया जाता था। यहाँ तक कि कुछ धार्मिक आचरणों को प्रतिबधिंत भी किया गया जो कि भारतीय धार्मिक परंपराओं की उनकी परिभाषा के विरुद्ध थे। शिक्षित भारतीयों ने भी इस विचार को स्वीकृति दी थी कि सभी लोगों के लिए एक एकल धर्म तथा संस्कृति होनी चाहिए। भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग ने पश्चिमी विचारकों द्वारा खोजी गई राष्ट्रीय पहचान की खोज का स्वागत किया तथा धार्मिक एवं सांस्कृतिक एकता को स्वीकार किया था। इस नव निर्मित "व्यावसायिक संघीय हिन्दूवाद" (Syndicated Hinduism) ने ब्रिटिश तथा उच्च वर्गीय हिन्दूओं को भारतीय समाज की संरचना तथा नियंत्रण करने का अधिकार दे दिया था। इसने बड़ी संख्या में अलग-अलग विश्वासों, जो कि समय के साथ क्षेत्रीय स्तर पर उत्पन्न हुए थे, उन सबको एक एकल धर्मग्रंथ पर आधारित राष्ट्रीय धर्म में बदलकर उसका राजनीतिकरण करके विलय कर दिया था।

चित्रकारी के क्षेत्र में भी इसी प्रकार का बदलाव आया था चित्रकारी में पश्चिम यथार्थवाद के आगमन के बाद भारतीय कला को आदिम घोषित कर दिया। भारतीय लोगों ने भी

इस प्रकार सोचना शुरू कर दिया था। भारतीय परंपरागत चित्रकला को हर प्रकार से संरक्षण देना बन्द कर दिया गया। ब्रिटिश सरकार द्वारा खोले गए स्कूलों में ऑयल पेन्टिंग (Oil Painting) तथा यूरोपीय तकनीकों को सिखाया जाने लगा था। भारतीय परंपरागत चित्रकारों ने अपना संरक्षण खो दिया था। इसलिए उन्होंने ब्रिटिश सरकार की पसन्द के अनुरूप अपनी शैली बदल ली जिसे कम्पनी कला कहा जाता था। यूरोप की सर्वोत्तम यथार्थवादी कला शुरुआती उपनिवेशवाद के दिनों में कला का मानदंड बन गई थी। अपनी योग्यता दर्शाने के लिए रवि वर्मा जैसे कलाकारों ने विक्टोरिया यथार्थवादी ऑयल चित्रकला के रूप में व्यक्तियों भारतीय आकृति तथा पौराणिक दृश्यों को दर्शाया था। वर्मा द्वारा इस पश्चिमी कला को बढ़ावा देने के कारण उन भारतीय कलाकारों को भी इसे अपनाने तथा बाजार में बेचने का मौका मिला, जिन्हें अब पारंपरिक भारतीय संरक्षण नहीं था। इससे पश्चिम तथा पूर्व के बीच एक प्रकार का समझौता हुआ। लेकिन भारत में राष्ट्रवाद के उदय के साथ इस विदेशी मूल की शैली को भारतीय प्रतिनिधि नहीं माना गया। वहीं से एक नई प्रतिनिधि भारतीय शैली की खोज शुरू हुई।

10.4 साम्राज्यवादी विचारधारा के साधनः शिक्षा तथा भाषा

भारत में औपनिवेशिक ताकतों की सत्ता के साथ ही यहाँ पश्चिमी शिक्षा तथा ज्ञान का भी प्रवेश हुआ था। भारत में तोपों, आधुनिक तकनीकी तथा रेलवे के साथ नई आधुनिक शिक्षा भी आई थी। यद्यपि भारत पर ब्रिटिश राज थोपा गया था। परन्तु फिर भी भारतीयों ने उनके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा को स्वीकार किया था। भारत में ब्रिटिश उपनिवेशिक सरकार, ईसाई मिशनरी, भारतीय समाज सुधारकों, राष्ट्रवादी नेताओं ने भारत में इस शिक्षा के प्रचार-प्रसार में सहयोग किया था। 1830 के दशक में एक बड़ी बहस उत्पन्न हो गई थी। ब्रिटिश अधिकारियों के बीच विवाद था कि क्या वे भारत में पूर्वी शिक्षा का संरक्षण करें जो परंपरागत तथा देशी भाषाओं में है या पश्चिमी साहित्य तथा ज्ञान का जो कि अंग्रेजी भाषा में है उसे प्रोत्साहित करें। हम जानते हैं कि इस विवाद में पश्चिमी शिक्षा के समर्थक जीत गए थे। भारतीय तथा देशज शिक्षा केवल पौराणिक, अंधविश्वासी, नकली तथा भ्रामक रूप में देखी जाने लगी। मैकाले के अनुसार भारतीय चिकित्सा विज्ञान "अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति" के सामने अप्रतिष्ठित प्रतीत होता है। तथा यहाँ का खगोल विज्ञान अंग्रेजी स्कूलों के होस्टलों में लड़कियों के लिए हंसी का विषय था।

थामस आर. मेटकाल्फ के अनुसार ब्रिटिश स्वयं को सर्वोत्तम के रूप में परिभाषित करने के लिए स्वयं को परिश्रमी, उन्नत, तर्कसंगत, प्रबुद्ध तथा पुरूषोचित दिखाते थे तथा भारतीयों को कमजोर, नारी सुलभ, अंधविश्वासी, अयथार्थवादी तथा असभ्य मानते थे, जिन्हें शिक्षा तथा सभ्यता सिखाने की आवश्यकता थी। औपनिवेशिक शिक्षण संस्थायें इसलिए महत्त्वपूर्ण थे क्योंकि उनके द्वारा प्रदान की जानते वाली शिक्षा भारतीयों को सरकारी नौकरी, कानून तथा व्यावसायिक नौकरी लेने के लिए योग्य बनाती थी। औपनिवेशिक शिक्षा यह सुनिश्चत करती थी कि वे कुछ ऐसे संज्ञान तथा सामाजिक कौशल प्रदान करेंगे जो पीढ़ी दर पीढी हस्तांतरित होंगे। इस शिक्षा का अन्य कार्य ऐसा देशी अभिजात्य वर्ग विकसित करना था जो महानगरीय तथा स्थानीय जनता के बीच बिचौलिये कि भूमिका निभायेगा। इस अभिजात्य वर्ग का उपयोग ब्रिटिश शासकों द्वारा महानगरीय बाजारों के लिए आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन के लिए स्थानीय लोगों को उस सामाजिक ढांचे के अनुसार बनाना था जो कि यूरोपीयन कार्य तथा सामाजिक संबंधों की अवधारणाओं के अनुसार सामाजिक संरचनाओं का अनुकूलन कर सकें। शिक्षा उभरते मध्यम वर्ग के लिए रोजगार प्राप्त करने का एक महत्त्वपूर्ण साधन भी था। गौरी विश्वनाथन के अनुसार ब्रिटिश औपनिवेशिक शिक्षा तथा इसके स्कूलों एवं पाठ्यक्रमों द्वारा पश्चिमी देशों की संस्कृति की सर्वोत्तमता का प्रचार किया जा रहा था।

औपनिवेशिक शिक्षा के प्रचलन ने भारतीय भाषाओं का अवमूल्यन किया। ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के साथ ही अंग्रेजी भाषा विश्व के हर हिस्से के कोने कोने तक पहुँच गई थी। अब अंग्रेजी भाषा का प्रयोग विश्व के हर हिस्से में होने लगा था। उसी समय पर उपनिवेश के लोगों को अपनी सांस्कृतिक विरासत छोड़ने और औपनिवेशिक संस्कृति सभ्यता को आत्मसात करने की आवश्यकता थी। इसे सांस्कृतिक औपनिवेशिकरण के नाम से जाना जाता है, इसके परिणामस्वरूप लोगों के दिमाग का औपनिवेशीकरण हो गया था। औपनिवेशिक ताकतों का मानना था कि उपनिवेशी राष्ट्रों को पश्चिमी संस्कृति की प्रशंसा करनी चाहिए तथा उसे अपना लेना चाहिए। इसके बाद वे ज्यादा समय तक औपनिवेशिक शक्तियों के नियंत्रण को नहीं रोक सकेंगे। शिक्षित कुलीन जनों के पश्चिमी मूल्यों को अपनाने से औपनिवेशिक शक्ति को अपना सतत् शासन चलाने में उनका समर्थन मिलेगा तथा जोर जबरदस्ती नहीं करनी पड़ेगी। औपनिवेशिक ताकतों का हमेशा यह तर्क रहता था कि तीसरे विश्व के देश निकृष्ट (Inferior) होते हैं। अतः उन्हें नैतिक एकता तथा आर्थिक शक्ति प्राप्त करने के लिए पश्चिमी देशों की सहायता की आवश्यकता है। उन लोगों ने देशज लोगों को 'असभ्य बर्बर' माना तथा नस्लीय पूर्वाग्रह आज भी विज्ञान, साहित्य, तथा जनसंचार माध्यमों में देखे जा सकते हैं।

भाषा किसी भी समाज में निर्णायक भूमिका अदा करती है। भाषा का समाज एवं संस्कृति के साथ मजबूत संबंध होता है। आर. फिलीपींस की दृष्टि में अंग्रेजी भाषा के वैश्विक भाषा बनने से न केवल अन्य भाषाओं का दमन हुआ बल्कि यह अपने सीखने वालों पर एक नया मानसिक ढांचा भी थोपती है। उनका मानना था कि इस प्रकार देशज भाषाओं को कलंकित करने से उनके उपयोग और विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा। भाषाई साम्राज्यवाद एक अवधारणा है जिसमें अन्य लोगों पर एक प्रभुत्वशाली भाषा का आरोपण शामिल है। थोपना वास्तव में प्रभुत्वशाली संस्कृति के आयामों का शक्ति प्रदर्शन तथा संस्कृति के पहलू भी भाषा के साथ स्थानांतरित होते हैं। ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने अंग्रेजी भाषा को पूरे संसार में फैला दिया था। आर. फिलिपिंस ने अंग्रेजी भाषा के साम्राज्यवाद को इस प्रकार परिभाषित किया है "यह व्यवस्था द्वारा प्रभुत्वशाली अधिकार स्थापित करने तथा अधिकार सुरक्षित रखने के लिए अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के बीच निरंतर ढांचागत पुनर्निर्माण एवं सांस्कृतिक असमानताएं स्थापित करती है।

बोध प्रश्न 1

1) ईसाई मिशनरीयों तथा साम्राज्यवाद के बीच संबंध की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

2) क्या आप समझते है कि साम्राज्यवाद ने भारत के धर्म तथा परंपराओं को प्रभावित किया है?

....

....

....

....

3) उपनिवेशों की शिक्षा पर साम्रज्यवाद का क्या प्रभाव पड़ा है? वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

10.5 साम्राज्य में खेल-कूद तथा संस्कृति

साम्राज्यवाद का अन्य सांस्कृतिक साधन उपनिवेशों के खेल कूद थे। खेल ब्रिटिश मूल्यों को औपनिवेशिक समाजों पर थोपने का एक माध्यम बन गया। उपनिवेश बनने से पूर्व उन देशों में मनोरंजन के लिए परम्परागत खेल व बाजियाँ लगाई जाती थीं। परन्तु उपनिवेश बनने के पश्चात् इनके मनोरंजन के तरीकों में बदलाव आ गया था। नए औद्योगिक श्रम अनुशासन की धारणा ने काम तथा अवकाश के बीच एक स्पष्ट रेखा खींच दी थी। यह कार्य घंटों के दौरान कार्यकुशलता तथा उत्पादकता से संबंधित था। मनोरंजन तथा अवकाश को वे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का गैर-उत्पादक अंग मानते थे। औद्योगिक विकास को सभ्यता का सबसे बड़ा प्रतीक मानते थे इसलिए अवकाश को विलास माना जाने लगा था। अंग्रेजी पब्लिक विद्यालयों के संदर्भ में दौड़ कूद प्रतियोगिता का अभिप्राय एक विचारधारा की तरह समझा जाता था। इसमें व्यावहारिक स्तर पर यथेष्ट तथा अनिवार्य रूप से समायोजित शारीरिक गतिविधियों में शामिल होना था विशेष रूप से टीम खेल जैसे क्रिकेट तथा फुटबाल खेलों में। ऐसा विश्वास किया जाता था कि इन खेलों में भाग लेने से व्यक्तिगत तौर पर शारीरिक विकास एवं नैतिक गुणों का विकास होगा जो कि उनके (छात्रों) भावी जीवन में लाभकारी होगा। खेलों में भाग लेने से उनके ये गुण आएंगे- समूह और स्वयं के प्रति कर्त्तव्य पालन, जिसमें समूह, स्कूल, देश भी शामिल हो सकता था, तथा ईमानदारी, न्याय, सत्य, सहयोग, आज्ञापालन की क्षमताएं भी खेलों में भागीदारी के द्वारा विकसित होती हैं। हर्बर्ट स्पेन्सर की पुस्तक *मौरल एजुकेशनः इन्टलैक्च्युअल मॉरल एन्ड फिजिकल,* 1860 में प्रकाशित हुई थी। इसका इंग्लैण्ड के पब्लिक विद्यालयों पर काफी प्रभाव पड़ा था वे विश्वास करते थे कि 'सर्वोत्तम की उत्तरजीवितता' का सिद्धांत जीवन के हर क्षेत्र में होता है। वे लोग जो क्रिकेटर तथा फुटबालर के रूप में अपनी पहचान बनाते हैं वे आदर तथा प्रशंसा के हकदार थे। टीम खेलों को अंग्रेजी पब्लिक विद्यालयों द्वारा बहुत प्रभावाशाली एवं कुशलतापूर्वक उपयोग किया गया था। विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा इसे उच्च वर्ग द्वारा निर्धारित नियमों एवं परंपराओं को समझाने के साधन के रूप में उपयोग किया जाता था। व्यावहारिक रूप में मूल्यों के क्षेत्र में खेल नैतिक प्रशिक्षण तथा सज्जन पुरुषों द्वारा प्रदर्शित पौरुष गुणों के आदर्श आचरण के पाठ के रूप में दिखाया जाता था। इन सीखों का इस्तेमाल खेलों को सुखदायी, जीत-हार, वफादारी, तथा भावनात्मक शक्ति के विकास करने का सुखदाई तरीका माना जाता है। इस बात पर जोर देना चाहिए कि खेल उनके लिए एक पूरी विक्टोरियाकालीन विचारधारा थी जिसमें उनके मूल्य, मनोवृत्तियाँ, मान्यता, पूर्वाग्रह का विस्तार, आदि इस संस्कृति प्रसार का एक अभिन्न हिस्सा थे। इस विचारधारा में शक्तिशाली पौरुष वाला ईसाई धर्म शामिल था और यह विचारधाराओं के समूह का मिलाजुला समूह था जिसमें नया सैन्यवाद, एक समर्पण, एक जुनून, एक पहचान, राष्ट्रीय वीरों की पूजा, सभी को शामिल किया गया था। व्यक्तित्व के समकालीन पंथ के साथ, यह नस्लवादी विचारों के साथ मिलकर यह एक प्रकार का सामाजिक डार्विनवाद (सर्वोत्तम की उत्तरजीवितता का विचार सभी समाजों तथा नस्लों पर लागू होता है) से भी जुड़ा हुआ था।

भारत में शाही संरचना पूर्वी क्षेत्र में एक आधारशिला तथा धुरी थी जिसमें मिलेजुले तौर तरीके तथा उच्च संस्थागत जीवन शैली के यादगार उदाहरण मिलते हैं, जिसमें राज्य के

मनोरंजन तथा खेल उच्चवंशीय ब्रिटिश लोगों के पहचान चिन्ह थे। भारत में इस काल में खेल की परंपरा संस्कृतिक धरोहर थी, जिसे विक्टोरिया काल में प्रचलित खेल एवं समय व्यतीत करने की विशेषताओं के सांस्कृतिक लक्षणों को परिलक्षित करती थी। तथापि यह शाही देशों की खेल परंपरा की शतप्रतिशत नकल नहीं थी। औपनिवेशिक समाजों में इसकी एक अत्यावश्यक विशेषता यह थी कि इसमें भागीदारी करने में विशेष वर्ग संरचना का प्रतिनिधित्व था जिसे नहीं ऊपर से रोपा (Transplanted) गई थी। इनमें एक समानता लाने के लिए परंपराओं को पूरी शक्ति लगाकर, धमका कर, तथा गैर-उपयोगी बता कर उनका त्याग कर दिया गया था। जरूरतों के अनुसार उन्हें तोड़मरोड़ कर अपने लिए उपयुक्त बना लिया था। क्रिकेट भारत में आरम्भिक रूप में ब्रिटिश कल्बों द्वारा आया था तथा सैनिकों एवं नाविकों द्वारा इसे लोकप्रिय बनाया गया था। इसे सबसे पहले पश्चिमी भारत के पढ़े-लिखे धनाढ्य सामाजिक समूह-पारसियों ने अपनाया था। धीरे-धीरे प्रतिद्वंदिता की सामूहिक परम्पराओं के रूप में इसे अन्य समूहों द्वारा भी अपना लिया गया और अन्त में यह एक लोकप्रिय खेल बन गया था।

10.6 साम्राज्य निर्माण में मादक पदार्थों की भूमिका

मानसिक रूप से क्रियाशीलता कम करने वाले प्राकृतिक मादक पदार्थों जैसे अफीम, भांग, कोकीन का पूर्व आधुनिक काल में अलग-अलग उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जाता था। इन दवाओं/मादक पदार्थों का औषधि उद्देश्यों के साथ-साथ शारीरिक एवं मानसिक उत्तेजना पैदा करने के लिए भी उपयोग किया जाता था। प्रकृति या दैवों की स्वाभाविक भेंट के रूप में इनका उपयोग धार्मिक एवं सांस्कृतिक समारोहों में भी किया जाता था। इन पदार्थों ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं के निर्वहन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। पूर्व आधुनिक काल में इन पदार्थों के उपयोग की शैली नियंत्रित थी, इनका उत्पादन सीमित होता था, तथा सांस्कृतिक रीतिरिवाजों ने इनके दुरुपयोग को नियंत्रित कर रखा था। सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में इन पारंपरिक दवाओं का उपयोग संभावित उपभोक्ताओं के द्वारा इसके अति उपयोग और लत को सीमित करने की रणनीति में ही अन्तर्निहित थी। उदारहण के तौर पर भारत में भांग का उपयोग भिन्न-भिन्न तरीकों से किया जाता है। प्रथम इसका औषधि उपयोग इसे अन्य तत्त्वों के साथ मिलाकर गठिया, सिरदर्द, मलेरिया, हैजा आदि के इलाज के लिए होता था। द्वितीय इसका उपयोग होली, कृष्णाष्टमी, शिवरात्रि, अरव्वा तीज आदि त्यौहारों पर किया जाता था। तृतीय इसका उपयोग साधु-संतो द्वारा वैकल्पिक चेतना तक में पहुँचने के लिए किया जाता था। भांग की क्षेत्रीय रूप से उत्पादन एवं सुगम उपलब्धता के बावजूद सामाजिक ढांचे के कारण इसका उपयोग सांस्कृतिक रूप नियंत्रित रहता था। परन्तु 1500 से 1800 के बीच के काल में इन मादक द्रव्यों के इस्तेमाल के तरीके में बुनियादी बदलाव आ गया था। अन्तर्महाद्वीपीय व्यापार तथा साम्राज्य निर्माण के उद्देश्यों के कारण लोगों की जाग्रत चेतना के बदलने उपाय के रूप में इसका प्रयोग होने लगा था। लाभ एवं राजस्व प्राप्त करने के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इन नशीले पदार्थों के उत्पादन, विश्वस्तर पर इनके हस्तांतरण को यूरोपीय व्यापारियों, सरकारों एवं उत्पादकों द्वारा प्रेरित किया गया। कुछ परिस्थितियों में उन्होंने इनके उपयोग का लोकतांत्रिकरण कर दिया था। जिस पर पहले केवल उच्च कुलीन वर्ग का ही विशेषाधिकार होता था।

विश्वस्तर पर इन पदार्थों का चुनाव, वाणिज्यक हस्तांतरण, वस्तुओं की भण्डारण अवधि, आदि के साथ-साथ यूरोपीय व्यापारियों की सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों पर आधारित था। कुछ पदार्थों जैसे कहवा, भांग, धतुरा, सुपारी भावी व्यापारिक वस्तुएं नहीं बन सकी लेकिन एल्कोहल, तम्बाकू तथा कैफीन आदि ऐसे तीन स्वाभाविक वस्तुएँ तत्त्व बन गई कि जिन्हें कि आमतौर पर मादक पदार्थ नहीं माना जाता है। इन तीनों का साम्राज्यवादियों की लाभ

प्राप्ति की प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए चयन किया गया था। अंगूर की खेती तथा चुनिंदा अंगूरों की शराब बनाने के लिए उसकी खेती करना यूरोप की एक पुरानी परंपरा थी। परन्तु चीनी और बाल्टिक अन्न का तथा जल्दी खराब होने वाले आलू से बनने वाली सुरा (spirit) नशे के लिए सस्ता स्रोत थी जिनसे बड़ी मात्रा में सुरा का उत्पादन बढ़ा। इससे यूरोप तथा गैर यूरोपीय देशों में नशे की लत तथा शराबखोरी बढ़ गई थी। उन्नत तकनीकों ने इन मादक पदार्थों की क्षमता बढ़ाने का कार्य भी किया। पूर्व आधुनिक समय में पेयों में बहुत सीमित मात्रा में एल्कोहल का उपयोग होता था लेकिन आधुनिक तकनीकों से बने पदार्थों में भारी मात्रा में एल्कोहल का एथनोल पंच (Punch) होता था। इसके साथ ही शराब के आर्थिक एवं सामाजिक उपयोग भी बदल गए थे। पंद्रहवी शताब्दी में पुर्तगालियों द्वारा तम्बाकू की खोज हुई थी तथा सत्रहवीं शताब्दी तक यह एक वैश्विक फसल बन गई थी। समाज के हर वर्ग, समूह, स्त्री, पुरुष तथा रहने के स्थानों पर इसका उपयोग अलग-अलग तरीके से होने लगा था। बीसवीं शताब्दी में सिगरेट की विजय का कारण, विज्ञापनों का चतुर उपयोग, बढ़ता शहरीकरण का दबाव, लिंग भूमिकाओं में बदलाव चिन्ह तथा कटे हुए तम्बाकू की अपेक्षा सुविधाजनक उपयोग के तरीकों से इसका उपभोग बढ़ गया था।

आधुनिक काल में साम्राज्य के केन्द्र में मादक पदार्थ थे। चीन में अफीम की बिक्री अफ्रीका में शराब तथा केरीबियन देशों में तम्बाकू तथा पूरे दक्षिण एशिया में भांग के साथ भारत में चाय आदि सबने मिलकर साम्राज्यवाद के प्रशासनिक ढांचे के निर्माण के लिए वित्तिय संसाधन उपलब्ध कराए और नए बाजारों को आर्थिक गति प्रदान की और आगे क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित किया। आर्थिक महत्त्व के साथ साथ मादक पदार्थ राजनीतिक साम्राज्य के केन्द्र में भी थे। एशिया में मादक पदार्थों के मार्गों पर नियंत्रण के लिए प्रतियोगिता करते हुए उन्नीसवीं शताब्दी के अफीम युद्धों से पहले यूरोपीयों ने बहुत सी सन्धियाँ की थी तथा लड़ाईयाँ भी लड़ी थीं। पूँजी के स्थानान्तरण, लोगों तथा विचारों के विनिमय में असमानता, तथा आधुनिक पदानुक्रम के संदर्भ में मादक पदार्थों के अवैध व्यापार को और अधिक बढ़ा दिया था। पंद्रहवीं शताब्दी में यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियों का शाही विस्तार मादक पदार्थों के पारंपरिक वितरण के तरीके में विचलन, उपयोग तथा उत्पादन पर आधारित था। इसके अतिरिक्त नशीले पदार्थों के वैश्विक नेटवर्क के विस्तार से यह और अधिक बढ़ रहा था। हम जानते हैं कि अफीम ने इसमें क्या भूमिका अदा की थी। ब्रिटिश साम्राज्य की महान वाणिज्यिक योजना बनाने में अफीम के व्यापार ने सैन्य तथा प्रशासनिक खर्चों को पूरा करने तथा साम्राज्य को अधिक लाभ प्राप्त करवाने में मदद की थी। अफीम के द्वारा औपनिवेशक प्रशासन के खर्चों का अधिकतर भुगतान हो जाता था। इन मानसिक रूप से चेतना को कम करने वाली वस्तुओं का साम्राज्य के साथ सांस्कृतिक तरीकों में भी महत्त्वपूर्ण संबंध था। एशिया के नशेडी लोगों की कामुक छवि, असहाय अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया के लोगों की शराब के नशे में गुम होने के कारण पश्चिम की सर्वोच्चता के निर्माण के बार-बार आने वाली विषय वस्तु थे। मोटेतौर पर पश्चिम द्वारा प्रतिपादित मान्यता के अनुसार पूर्वी समाज स्थिर तथा अविकसित थे। इस प्रकार की धारणा ने एक प्राच्यवादी संस्कृति की रचना ने इस ताने बाने में विशिष्ट सहयोग दिया था। जिसके द्वारा पश्चिमी समाज को विकसित, तार्किक, लचीला तथा महान बताकर साम्राज्य को वैधता एवं प्रामाणिकता प्राप्त होती थी। इसके अलावा साम्राज्यवाद में सभ्य बनाने की प्रवृत्ति वाली विचारधारा को केन्द्र में रखकर उदारवादी तथा मिशनरी दोनों ने इन नशे से ग्रस्त लोगों की नशे से मुक्ति की आवश्यकता को घोषित किया।

10.7 सांस्कृतिक आधिपत्य के आधुनिक विचार

सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के नए विचार 1960 के दशक में पैदा हुए थे। अब सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के फैलाव को आर्थिक, तकनीकी तथा सांस्कृतिक आधिपत्य को औद्योगिक

देशों के आधिपत्य के रूप में परिभाषित किया गया जो कि आर्थिक सामाजिक विकास की दिशा को निधारित करते हैं तथा यह सांस्कृतिक मूल्यों तथा पूरे विश्व के सांस्कृतिक वातावरण की मानकीकरण करता है। अब यह तर्क दिया जाने लगा था कि सारा विश्व एक साझा बाजार है जिसमें एक तरह के तकनीकी उत्पादों का विकास, एक तरह का ज्ञान, फैशन, संगीत, साहित्य तथा एक ही प्रकार की महानगरीय संस्कृति का निर्माण, खरीद तथा बिक्री होती है। पश्चिमी विचारधाराएं, राजनीतिक विश्वास, पश्चिमी विज्ञान, कानून, सामाजिक परंपराएं, सामाजिक संस्थाएं, नैतिक विचार, कार्य करने के तरीके, खाना, मनोरंजन की क्रियाएं, पॉप संगीत, मानव अस्तित्व की अवधारणाएं आदि मानक आदर्श निर्धारित करके सारे विश्व के लिए उदाहरण तथा मूल्य बन गए थे।

संस्कृति का नई पीढ़ी तक प्रसार का कार्य अब आधुनिक राज्य के संस्थानों द्वारा किया जाता था। यह अब उन राजकीय संस्थाओं का कर्त्तव्य बन गया था जो पराराष्ट्रीय महानगरीय मानकों के अनुरूप होता है। सभी नस्लों की सांस्कृतिक विरासत अब ज्यादा से ज्यादा- 1) पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था तथा 2) पश्चिमी संचार की प्रधानता के नियंत्रण में आ चुकी थी। जनसंचार साधनों पर नियंत्रण करके स्थानीय संस्कृति तथा ज्ञान को हटाकर तेजी से वैश्विक मानकीकृत ने उसका स्थान ले लिया। संस्कृति तथा ज्ञान यह हर देश में बिना उनकी विचारधारा को समझे पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था के मानकीकृत लक्ष्यों को पूरा कर रही है। विकासशील देशों में व्यावसायिक शैक्षिक समूहों का निर्माण किया जा रहा है जो उसी प्रकार संगठित है और उसी समान प्रकार के ज्ञान तथा सांस्कृतिक मूल्यों का हस्तातंरण करते हैं। यह माना जाता है कि यह महान संस्कृति, जो कि आधुनिक तकनीकी तथा मूल्यों से बनी है वह स्थानीय संस्कृति, ज्ञान व्यवस्था, पूरी अभिव्यक्तिशीलता, कार्य-कारण के सम्बंध की परम्परागत प्रणाली जिस पर परंपरागत संस्कृति आधारित थी उसे नष्ट कर रही है। इनके स्थान पर एक महान संस्कृति ने पश्चिमी समाजीकरण के तंत्र, शक्ति के विचार, तथा मूल्य इनकी पूर्ति करती है। इस महान संस्कृति का अपना सर्वोत्तम तंत्र था जो अन्य संस्कृतियों का मूल्यांकन करता है। जिस प्रकार लोगों की बुद्धिमत्ता तथा क्षमता के मापकों से मूल्यांकन किया जाता है वैसे ही अब अन्य राष्ट्रों का आकलन तकनीकी तंत्रों के मापकों के द्वारा किया जाता है। संस्कृति के हर आयाम का अपना मात्रात्मक मापक हैः 1) उनका विकास का मापकः सकल घरेलू उत्पाद, निर्यात की मात्रा, औद्योगिक सूचकांक के द्वारा, 2) उनकी प्रसन्नता का मापकः जीवन स्तर तथा कितनी भौतिक सुविधाएं हर व्यक्ति के पास या हर घर में हैं, 3) असंतोष : भुखमरी, बीमारी, मृत्युदर द्वारा मापी जाती हैं। ये सांस्कृतिक आंकड़े पश्चिमी समाजों के लिए अपरिहार्य बन गए हैं क्योंकि इनसे उन्हें सामाजिक तथा आर्थिक योजनाएं बनाने के लिए वैज्ञानिक आधार मिलता है। इसलिए सांस्कृतिक साम्राज्यवाद का वर्णन साम्राज्यवाद के सांस्कृतिक आयामों के रूप में किया जाता है।

इस चर्चा में साम्राज्यवाद बृहद रूप में असमान सभ्यताओं में तथा शक्तिशाली सभ्यताओं की तरफदारी करने वाले संबंधों के गठन तथा उन्हें कायम रखने से संबंधित है। इसलिए इसे उन राजनीतिक रूप से प्रबल देशों द्वारा कम शक्तिशाली समाजों पर अपनी संस्कृति को ऊँचा दिखाने तथा थोपने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। सांस्कृतिक आधिपत्य के लिए औद्योगिक या आर्थिक रूप से विश्व का नेतृत्व करने वाले देश अपने सामान्य सांस्कृतिक मूल्यों तथा सभ्यताओं के अनुरूप मानकीकरण करते हैं। एक प्रभुत्वशाली देश के प्रभावी सांस्कृतिक प्रभाव का परिणाम शोषित जनसंख्या के सांस्कृतिक संक्रमण में निहित हो सकता है अथवा स्वैच्छिक रूप से साम्राज्यवादी संस्कृति के साथ सम्मिलित हो जाने के रूप में हो सकता है। सांस्कृतिक संक्रमण को महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। इसे इस प्रकार परिभाषित किया गया था "सांस्कृतिक संक्रमण उस अवस्था का परिणाम होता है जब अलग-अलग संस्कृति के लोग आपस में मिलते हैं जिससे उनमें से

किसी एक या दोनों संस्कृतियों या समूहों की मौलिक संस्कृतियों में अनुवर्ती परिवर्तन होते हैं।" (रैडफिल्ड आर., लिंटन आर, हरोस्कबोइट, एम. जे, 'मैमोरेंडम ऑन दा स्टडी ऑफ एक्लचरेशन', *अमेरिकन एंथ्रोपोलोजिस्ट* 1936; पृ.149, 973-1002)।

सांस्कृतिक प्रभाव 'प्राप्त' करने वाले को तय करना है कि इस प्रभाव को किस प्रकार लेना है- परंपराओं के लिए खतरे की तरह अथवा अपने सांस्कृतिक समृद्धि (enriching) के रूप में। यह निश्चय करना मददगार होगा, यह जानने के लिए की सांस्कृतिक साम्राज्यवाद सर्वोत्तमता के व्यवहार तथा किसी सांस्कृतिक समूह उसकी संस्कृति उत्पादन के पूरक रूप से किस प्रकार भिन्न है ताकि आयातीत उत्पादों की कमियों को समझा जा सके। कुछ लोगों का मानना है कि बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा इक्कीसवीं शताब्दी के शुरुआत में नवभूंमण्डलीकृत अर्थव्यवस्थाओं ने संचार तकनीकी के द्वारा इन प्रक्रियाओं को आगे बढ़ाया है। इस तरह के सांस्कृतिक साम्राज्यवाद "नरम शक्ति" (Soft Power) कहा जाता है इलैक्ट्रोनिक उपनिवेशवाद (electronic colonialism) की अवधारणा इलैक्ट्रोनिक भूंमण्डलीकृत मुद्दे के सांस्कृतिक मुद्दे को आगे बढ़ाता है तथा बहुसंचारीय समूहों के प्रमुख प्रभाव को देखता है- वायोकेम (Viocam), टाइम वारनर (Time Warner), डिजनी, समाचार निगम (News Corp.) सोनी, गूगल तथा माइक्रोसॉफ्ट आदि इन शक्तियों का अधिकतर प्रभुत्व संयुक्त राज्य अमेरिका में आधारित इन संचार शक्तिशाली निगमों द्वारा एकत्रित रूप से स्थापित किया जाता है।

सांस्कृतिक साम्राज्यवाद को अक्सर पश्चिमी नैतिक विचारों, वस्तुओं तथा राजनीतिक विश्वासों को पूरे विश्व में फैलाने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। वर्तमान समय में अमेरिका न केवल सांस्कृतिक शक्ति है बल्कि राजनीतिक तथा आर्थिक सर्वोच्च शक्ति भी है। अमेरिका के उपभोग के तरीके पूरे विश्व में फैल चुके हैं। कुछ लोगों का मानना है कि अमेरिका के विश्वासों तथा विचारों और वैश्विक मूल्यों का अधिकतर देशों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है क्योंकि वे स्वतंत्रता, लोकतंत्र, समानता तथा मानव अधिकारों के साथ जुड़े हुए हैं। इसके प्रस्तावकों का तर्क है कि इसके आधुनिक विचारों तथा विश्व सामाजिक विकास ने विश्व संस्कृति को और अधिक समृद्ध कर दिया है।

अन्य ने अमेरिका के सांस्कृतिक आधिपत्य को एक खतरा माना है। उनका विचार है कि यद्यपि इन्होंने शायद कुछ पिछड़े देशों की मदद की है लेकिन यह सकारात्मक कार्य करने में स्थानीय बाजारों तथा स्थानीय संस्कृतियों को भी नुकसान पहुँचाया है। आलोचकों के तर्क के अनुसार विश्व इस समय सांस्कृतिक समझता की ओर बढ़ रहा है जिससे साम्राज्यवादी संस्कृति वैश्विक संस्कृति के रूप में और अधिक सटीक बनती जा रही है। यह सांस्कृतिक समानता निश्चित रूप से स्थानीय संस्कृति को समाप्त करने की ओर बढ़ रही है। इसका परिणाम यह होगा कि विश्व में सांस्कृतिक विविधता तथा संपन्नता कम होती जाएगी। यह सांस्कृतिक साम्राज्यवाद चाहे स्वैच्छिक हो या अन्यथा, के विरोध के लिए एक कारण हमेशा बहुआयामी संस्कृति की रक्षा करना होता है तथा ऐसा कहा जाता है कि इस संरक्षण को जैविक एवं भौगोलिक विविधता के संरक्षण के लक्ष्य की तरह महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। इस विचार के समर्थकों ने यह तर्क दिया है कि इससे विसंस्कृतिकरण का दबाव बढ़ता है। (हैरोस्कोविटस एम.जे., *मैन एण्ड हिज वर्कसः द साइंस ऑफ कल्चरल एन्थ्रोपोलॉजी*, पृ. 5) इसका तात्पर्य है कि इसमें सामाजिकरण की प्रक्रिया तथा स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने के प्रमुख विचार, अवधारणाएं तथा मूल्य शामिल हैं। इस विचार के समर्थकों का मानना है कि विविधता मानव की ऐतिहासिक ज्ञान का संरक्षण एवं साधनों को बनाए रखने के लिए अपने आप में बहुमूल्य होती है। तथा इसी के द्वारा समस्याओं के समाधान तथा महाविपत्तियों के प्राकृतिक या अन्य विपत्तियों के उत्तर देने तथा रोकने के उपाय प्राप्त होते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) साम्राज्य निर्माण में मादक पदार्थों की भूमिका की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

2) समकालीन सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के विचारों की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए।

....

....

....

....

....

10.8 सारांश

साम्राज्यवादी देशों द्वारा औपनिवेशिक साम्राज्यों को आर्थिक एवं व्यापारिक हितों के साधनों के रूप में देखा जाता था। इसी प्रकार इन उपनिवेशों के समाजों पर साम्राज्यवाद का प्रभाव भी अमिट तथा लम्बे समय तक रहने वाला था। शाही विचारधाराओं एवं उपनिवेशों की राज्य व्यवस्था का प्रभाव लोगों के रहन-सहन, वेशभूषा, खेल, पूजा के तरीके तथा उनकी उपभोग की आदतों पर पड़ा था। इसके साथ-साथ औद्योगिक तथा अन्य पदाथ, मूल्य, खेल, खाने की आदतें आदि भी इन उपनिवेशों में आयात की गई थी। इसके परिणामस्वरूप उपनिवेशों में पहले से स्थित सांस्कृतिक परिदृश्यों में परिवर्तन हुए थे। आज भी यह सांस्कृतिक संबंध जारी हैं जिसमें अब इलैक्ट्रोनिक साम्राज्यवाद द्वारा नए सांस्कृतिक विचार सांस्कृतिक संक्रमण लाने का प्रयास कर रहे हैं। औपनिवेशिक सांस्कृतिक परंपराएं कुछ हद तक शाही संस्कृति के द्वारा नियंत्रित हो चुकी हैं। साम्राज्यवादी संस्कृति के प्रवाह का स्थानीय लोगों द्वारा प्रायः विरोध भी किया जाता है परंतु इस प्रभुत्वशाली साम्राज्यिक संस्कृति के आधिपत्य की प्रकृति को भी नकारा नहीं जा सकता है।

10.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 10.2।

2) देखें भाग 10.3।

3) देखें भाग 10.4।

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 10.6।

2) देखें भाग 10.7।